रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष–4 | अंक 40 | जून 2010 | मूल्यः 5रू.

बरली संस्थान का रजत जयंती वर्ष

ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के सशक्तिकरण को समर्पित बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान ने अपनी सेवा के 25 वर्ष 1 जून 2010 को पूरे किए। जब कोई इंसान या संस्थान 25 वर्ष का हो जाता है तो उस दिन से रजत जयंती वर्ष शुरू हो जाता है। रजत शब्द का मतलब है 'चांदी'। बरली संस्थान का रजत जयंती वर्ष 1 जून 2010 से शुरू हुआ। पिछले 25 वर्षों में संस्थान की शुरूआत से लेकर अभी तक जो भी हुआ, वह किन उद्देश्यों से किया गया? किसके लिए किया गया? क्या–क्या किया गया? उसका क्या परिणाम हुआ? इससे जुड़ी जानकारियाँ लेकर बरली की दुनिया का यह अंक आपके पास आ रहा है। आप सभी प्रशिक्षणार्थियों के कारण संस्थान है। आप सभी के लिए संस्थान है। आपका अपना संस्थान है। आपके सहयोग से संस्थान ने 25 साल पूरे किए और रजत जयंती वर्ष में प्रवेश किया। इसलिए आप सभी को बधाई और धन्यवाद।

रजत जयंती वर्ष के कार्यक्रम

रजत जयंती का मुख्य कार्यक्रम नवम्बर 2010 में होगा। आपका अपना कार्यक्रम है। कार्यक्रम में 99 वाँ दीक्षांत समारोह होगा व 100 वाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू होगा। जून 2010 से मई 2011 तक बरली संस्थान इंदौर और छत्तीसगढ़ के विस्तार केन्द्रों में होने वाले कार्यक्रम रजत जयंती वर्ष के अंतर्गत मनाए जाएंगे। इन कार्यक्रमों में सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण, स्वतंत्रता दिवस, अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस, विश्व एड्स दिवस, गणतंत्र दिवस, अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और माता–पिता का सम्मेलन शामिल है।

अभी से लेकर नवंबर 2010 तक हर महीने दो बार तीन–तीन दिन का समुदाय स्वास्थ्य प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण होगा। यह प्रशिक्षण विशेष तौर पर उनके लिए होगा जो पहले यहाँ से प्रशिक्षण ले चुकीं हैं। इस प्रशिक्षण में स्वास्थ्य के कई महत्वपूर्ण विषयों जैसे स्वस्थ जीवन, जलने से होने वाली दुर्घटनाओं का बचाव और इलाज, दूषित पानी से होने वाली बीमारियों के बचाव और इलाज, एच.आई.वी. /एड्स के कारण, बचाव व इलाज, परिवार नियोजन, प्राथमिक चिकित्सा, मातृ व शिशु स्वास्थ्य, स्वास्थ्य और साफ–सफाई, स्वस्थ व संतुलित पोषक आहार, समुदाय की सेवा, और लिंग समानता व स्वास्थ्य के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा। ताकि आप अपने परिवार और गाँव को स्वस्थ रखने में सहयोग दे सके।

रजत जयंती सम्मेलन

सम्मेलन में पिछले 25 वर्षों के इतिहास पर आपके फोटो

दिखाए जाएंगे। आपकी फिल्म दिखाई जाएगी। हम आपके साथ 25 वर्षों में किए गए सेवा कार्यों की समीक्षा करेंगे। बाटिक प्रिंटिंग और आपके लिखे गए विकास के लोक गीतों की पुस्तकें प्रकाशित की जाएगी। अगर आप पहले एक बार हर महीने में होने वाले तीन दिन के सामुदायिक स्वास्थ्य स्वयंसेविका प्रशिक्षण और फिर रजत जयंती के सम्मेलन में भाग लेंगी तो हमें बहुत खुशी होगी। आशा करते हैं कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में आप रजत जयंती समारोह में भाग लेंगी। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आप हमें पत्र लिखकर या फोन पर सूचित कर सकते हैं। फोन नं. आखिरी पन्ने पर दिए गए हैं। संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों का 100 वाँ दीक्षांत समारोह रजत जयंती वर्ष के समापन के साथ होगा।

बरली संस्थान की स्थापना

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की स्थापना 1 जून 1985 को भारत की राष्ट्रीय बहाई आध्यात्मिक सभा ने 'बहाई ग्रामीण महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण संस्थान'के नाम से की थी। संस्थान बहाई सिद्धांतों से प्रेरित है। सन् 2001 में मध्यप्रदेश सोसायटी अधिनियम के तहत संस्थान स्वशासी स्वयंसेवी संस्था बना और उसे बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान का नाम दिया गया। भिलाली बोली में 'बरली' शब्द का मतलब है घर के बीच का वो खंभा जिस पर पूरा घर टिका रहता है। आलीराजपुर, झाबुआ, धार जिले के आदिवासी समुदायों में "बरली" लड़कियों का जाना पहचाना नाम है। संस्थान को यह नाम को देने के पीछे यही अवधारणा है कि जिस तरह 'बरली' पर घर टिका रहता है उसी तरह महिला पर परिवार व समाज टिका रहता है दूसरे शब्दों में महिला ही परिवार व समाज की बरली है। महिला सशक्त होगी तो परिवार व समाज सशक्त होगा। इसलिए इसका नाम बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान है। संस्थान की शुरूआत विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए की गई थी जिन्हें समाज में पिछड़ा समझा जाता है। प्रशिक्षण में ग्रामीण, आदिवासी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति,विकलांग,विधवा, परित्यक्ता, सामाजिक या आर्थिक रूप से जरूरतमंद महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है। ये ज्यादातर निरक्षर, और जो स्कूल की पढ़ाई बीच में छोड़ चुकी होती हैं और इनकी उम्र 15 से 35 वर्ष के बीच होती है।

बरली संस्थान का उद्देश्य

बरली संस्थान का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं को प्रशिक्षित कर इतना सशक्त बनाना है कि वे अपना, अपने परिवार, गाँव, समुदाय व देश के विकास में अपना योगदान दे सकें। उन्हें सिलाई सिखाने के साथ पढ़ना–लिखना, स्वास्थ्य, पर्यावरण और समुदाय के विकास की भी शिक्षा दी जाती है। कटाई–सिलाई सीख कर वे अपना काम शुरू कर आत्मनिर्भर बन सकें। स्वास्थ्य की बातें सीख कर बिमारियों से बच सकें। गाँव में गलत मान्यताओं के बारे में जानकर उन्हें दूर कर सकें। पर्यावरण के बारे में जानकर पर्यावरण को बचा सके। आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में आगे बढ़े व सशक्त बन सकें। शिक्षा पाकर गरीबी, अंधविश्वास व बीमारी कम कर सके और समुदाय की सेवा का सके।

संस्थान के मुख्य कार्यक्रम

अब तक 99 प्रशिक्षणों में मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ, आलीराजपुर, खरगोन, बड़वानी, बुरहानपुर, खण्डवा, देवास, शाजापुर, भोपाल सहित उड़ीसा, त्रिपुरा, उत्तरप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, सिक्किम, मणिपुर, आंध्रप्रदेश आदि राज्यों के आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों के 500 गाँवों से करीब 6000 से ज्यादा महिलाओं ने प्रशिक्षण लिया है। इन महिलाओं ने बरली संस्थान में रहकर पढना–लिखना, कटाई–सिलाई, बाटिक व ब्लॉक प्रिंटिंग, टाइपिंग और कम्प्यूटर सीखा। पर्यावरण के अंर्तगत जैविक खेती और सौर ऊर्जा का उपयोग करना सीखा। निर्मल ग्राम योजना के अंर्तगत संस्थान में महिलाएँ शौचालय बनाने का प्रशिक्षण भी ले चुकी हैं।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विकास

पिछले 25 वर्षों में संस्थान के प्रशिक्षण कार्यक्रम में शुरूआत से लेकर अभी तक काफी बदलाव आए हैं। शुरूआत में प्रशिक्षण 9 से 10 दिन के होते थे। प्रशिक्षणार्थियों को टाट–पट्टी, साबुन, चॉक, मोमबत्ती, अगरबत्ती आदि बनाना सिखाया जाता था। सन् 1988 से संस्थान ने एक–एक महीने के आवासीय प्रशिक्षण शुरू किए। सन् 1994 से सामुदायिक स्वयंसेविका का आवासीय प्रशिक्षण शुरू किया गया जो 3–3 महीनों का होता था। ज्यादातर महिलाएँ निरक्षर होती थीं। उनमें से स्कूल छोड़ी, आठवीं पास या इससे ज्यादा पढ़ी–लिखी महिलाओं को सामुदायिक प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण दिया जाता था। सन् 1998 के बाद प्रशिक्षण की अवधि 3 से 6 महीने और फिर एक साल की कर दी गई। वर्तमान में सामुदायिक स्वयं सेविका प्रशिक्षण कार्यक्रम और सामुदायिक प्रशिक्षिका प्रशिक्षण छह महीने का होता है। ये सभी प्रशिक्षण नि:शुल्क एवं आवासीय हैं। जैसे–जैसे संस्थान बड़ा होता गया प्रशिक्षणार्थियों की संख्या भी बढ़ती गई। पहले हर प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों की संख्या 10 से 20 होती थी। अब ये बढ़कर 100 तक हो गई है।

प्रशिक्षण कार्यशाला व अन्य गतिविधियाँ

हर साल संस्थान व इसके विस्तार केन्द्रों में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, अंर्तराष्ट्रीय साक्षरता दिवस और विश्व एड्स दिवस के अवसर पर कार्यशाला आयोजित की जाती है जिसमें आदिवासी और ग्रामीण महिलाएं बहुत ही उत्साह से भाग लेती हैं। कार्यशाला के दौरान उन्हें विषय विशेषज्ञ पढ़ाते है, उनसे चर्चा करते हैं। इससे वे नई–नई बातें सीखतीं हैं और उनमें नई बातों को जानने की इच्छा बढ़ती है। प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षणार्थियों को अपनी बात सभी के सामने रखने का मौका मिलता है जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। वे अपने आप, अपने परिवार और समाज की समस्याओं को पहचान कर उन्हें दूर करने की अपनी तरफ से पूरी कोशिश करती हैं। राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर पहले से ही गीत और झंडा वंदन की तैयारियाँ करतीं हैं। सबसे खास बात तो ये है कि आदिवासी और ग्रामीण महिलाएँ स्वयं ही झंडा फहरातीं हैं।

नेशनल ओपन स्कूलिंग की परीक्षा

सन् 1985 से 1997 तक संस्थान के प्रशिक्षण को कोई सरकारी मान्यता नहीं थी। फिर भी ज्यादातर महिलाओं को संस्थान से

मिले प्रमाण–पत्र के आधार पर सरकार से कर्जा मिल जाता था और वे अपना काम शुरू कर कमाई करती थी। सन् 1998 में संस्थान को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा दो प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण ''कटाई–सिलाई'' व ''हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग'' के लिए सरकारी मान्यता दी गई। नेशनल ओपन स्कूलिंग के कटाई–सिलाई की परीक्षा में 85 से 100 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थी उत्तीर्ण होती हैं।

संस्थान के पाठ्यक्रम

शुरूआत में संस्थान की अपनी कोई पुस्तकें नहीं थीं लेकिन अब तक ग्रामीण एवं आदिवासी महिलाओं के संस्कृति और जरूरतों को देखकर साक्षरता, स्वास्थ्य और सिलाई की पुस्तकें लिखी जो कि प्रकाशित हो चुकी है। इससे प्रशिक्षण देना बहुत आसान हो गया और सीखने वालों को भी जल्दी समझ आता है। बाटिक प्रिंटिंग प्रशिक्षण और आदिवासी लोक गीतों की पुस्तकें भी इसी वर्ष प्रकाशित की जाएगी।

संस्थान परिसर का विकास

संस्थान परिसर पूरे छह एकड़ में फैला हुआ है। सबसे पहले सितम्बर 1987 को संस्थान का अपना वर्कशेड तैयार हुआ और उसके बाद 21 अप्रैल 1988 में प्रशिक्षणार्थियों के आवासीय भवन तैयार हुए। सन् 2000 में कार्यालय, पुस्तकालय, स्टाफ के आवासीय भवन, सोलर किचन, भोजन का कमरा, भंडार घर, सिलाई व टायपिंग के प्रशिक्षण के लिए कमरें बनें। 2004 में एक बहुत बड़ा हॉल बना और अभी–अभी 2009 से सभी सुविधाएँ बढ़ा दी गई हैं।

पर्यावरण तकनीकों का विकास

पर्यावरण बचाने में बरली संस्थान हमेशा से आगे रहा है। 1998 में संस्थान ने मध्यप्रदेश में पहला सोलर किचन बनाया। किचन में तीन बड़े पैराबॉलिक शेफलर कुकर हैं। संस्थान ने अपने प्रशिक्षणार्थियों और स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को 400 से भी ज्यादा सोलर कुकर दिए हैं। संस्थान के ढाई एकड़ जमीन में उगाए गए अनाज, दालें व सब्जियां, फल, मसालें आदि साल भर प्रशिक्षणार्थियों के खाने में उपयोग किए जाते हैं। किचन, शौचालय, बर्तन धोने और खाना पकाने के बाद पानी को नहीं बहने देते है। एक टंकी में जमा करके पाईपों और फव्वारों से खेती और बगीचे में काम लिया जाता है। इस तरह 60 प्रतिशत पानी को फिर से काम में लिया जाता है। यहाँ किसी भी चीज को फेंका नहीं जाता। कपड़े की बची कतरनों से चिड़ियों के झूमर बनाए जाते है। जूठन या बचे हुए बासी खाने व सब्जी के छिलकों से जैविक खाद बनाते है। कंघी करने के बाद निकले बाल से बाटिक छपाई में मोम लगाने वाले ब्रश बनाते हैं। रद्दी पेपर व सूखे पत्ते से धुँआरहित कंडें बनाए जाते हैं।

संस्थान की पत्रिका

बरली की दुनिया संस्थान की मासिक पत्रिका है, जो 1993 से कोकिला के नाम से प्रकाशित होती थी। यह सभी प्रशिक्षणार्थियों को भेजी जाती है ताकि वे पढ़ने लिखने और जानकारियों से जुड़ी रहे। इस पत्रिका में प्रशिक्षित महिलाओं के समाचार छपते हैं। प्रशिक्षणार्थी इनमें लिखी जानकारियों को पढ़कर अपनी सहेलियों और परिवार में ज्ञान फैलातीं हैं।

विस्तार केन्द्र

विस्तार केन्द्रों को उन महिलाओं के लिए शुरू किया गया था जो घर छोड़कर संस्थान में रहकर प्रशिक्षण नहीं ले सकती थी। सन् 2004–2005 में ग्रामीण क्षेत्रों में तीन विस्तार केन्द्रों की शुरूआत की गई। बिलखिरिया,निपानिया काकंड, पडरिया काछी, पिपल्या कुमार, गुड़गाँव व नूह में, पल्ला और ग्वालियर में भी विस्तार केन्द्र चलाए गए थे। छत्तीसगढ़ के काँकेर जिले में 2006 से अभी तक संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षिकाएँ इन विस्तार केन्द्रों को चलातीं हैं। यहाँ पर तीन–तीन महीनों के प्रशिक्षण दिए जाते हैं।

काम के परिणाम

संस्थान से प्रशिक्षित ज्यादातर महिलाएँ अपने परिवार और समुदाय में अपने सीखे हुए ज्ञान को पहुँचाकर जागरूकता फैला रहीं हैं और कई संस्थान में अपनी सेवाएँ दे रहीं हैं।

व्यावसायिक

प्रशिक्षण के बाद बहुत सारी महिलाओं ने गाँव में कटाई सिलाई का काम शुरू किया है। कुछ ने अपनी सिलाई की दुकानें खोल ली हैं और रोज के 100 से 200 रूपए कमा रहीं हैं। साथ ही अपनी पढ़ाई भी जारी रखी है। उदाहरण के लिए श्रीमती लीला भाटी ने प्रशिक्षण के बाद संस्थान में प्रशिक्षिका के पद पर काम किया। संस्थान से जाने के बाद पारा गाँव में अपने पति के साथ सिलाई की दुकान चला रही है। काम समय पर पूरा करने के लिए चार अन्य सहायकों को भी रोजगार दिया है। जिला खरगोन की राधा चौहान ने प्रशिक्षण के बाद दसवीं ओपन परीक्षा की तैयारी शुरू की। गाँव में अभी सिलाई का काम करते हुए आत्मनिर्भर बन गई है। संगीता जमरे वापस जाकर सिलाई का काम कर पैसे कमा रही है।

स्वास्थ्य व शिक्षा

प्रशिक्षित महिलाएँ गाँव वापस जाकर स्वास्थ्य संबंधी बातें अपने समुदाय में बताती हैं। जैसे बड़वानी की सारिका मुकेश ने अपने गाँव में आशा कार्यकर्ता के रूप में काम किया और गर्भवती महिलाओं और बच्चों के देखभाल के लिए जरूरी बातें बताई। कई महिलाएँ आंगनवाड़ी कार्यकर्ता भी बन चुकी हैं। खरगोन जिले की अमिता, द्वारकी, रीना आदि आँगनवाड़ी कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहीं हैं और संस्थान के स्वास्थ्य की पुस्तक का भी उपयोग कर रही है। आलीराजपुर की पुप्पी डोडवा ने दिन–रात मेहनत करके संस्थान में पढ़ना–लिखना सीखा और जाने के बाद पांचवीं की परीक्षा पास की। अब वह आठवीं की परीक्षा की तैयारी कर रही है। वह गाँव में सभी को साफ–सफाई व किशोरावस्था और गर्भावस्था में महिलाओं के खान–पान के बारे में बताती हैं।

धार की अन्तरी बघेल जब संस्थान आई थी तो 10 वीं फेल थी। प्रशिक्षण के बाद उसमें आगे बढ़ने की हिम्मत बढ़ी। उसने 10 वीं पास की। बी. ए., एम. ए. हिन्दी साहित्य और बी. एड. तक की पढ़ाई के बाद इंदौर के देवी अहिल्या विश्वविद्यालय से एम. फिल. किया।

पर्यावरण शिक्षा

रीना डावर ने प्रशिक्षण पूरा कर दसवीं की परीक्षा दी। वह संस्थान से मिली पर्यावरण की शिक्षा का पूरा उपयोग कर रही है। प्रशिक्षण के बाद जब वह वापस गाँव गई तो गुलमोहर के

बीज लेकर गई थी और अपने गाँव में बोए जिसे देखकर दूसरे लोगों ने भी पौधे लगाने की प्रेरणा ली। उसने लोगों को बताया "हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए क्योंकि पेड़–पौधे और पशु–पक्षी अपना दुख दर्द बोल नहीं सकते हैं।" जिन महिलाओं ने संस्थान में सोलर कुकर पर खाना बनाना सीखा वे अपने साथ सोलर कुकर ले गईं हैं और गाँवों में अपने परिवार और समुदाय के लोगों को इसके तकनीक और फायदों के बारे में बता रही हैं। उदाहरण के लिए आलीराजपुर की रूक्मनी सोलंकी, रमीला मंडलाई, रमीला सोलंकी, खरगोन की सुनिता जमरा, मीरा वास्कले, देवास की पार्वती गहलोद, बिहार की बीनू कुमारी, उड़ीसा की मधुस्मिता, बेतुल की श्रीमती ललिता सोनी आदि सोलर कुकर का अच्छा उपयोग कर दूसरों को भी इसके लाभ बता रही है। धार के सेमलीपुरा गाँव में श्रीमती कोमल सुमेर सिंह रोज चाय बेच कर 200 से 300 रूपए कमा रही है।

सामुदायिक सेवा

खरगोन के मेंडागढ़ गाँव की सुरमी चौहान दसवीं की पढ़ाई कर रही है और शाम को रोज दो घंटे गाय भैंस चराने वाले बच्चों को पढ़ाती है। वह सेवा भारती स्कूल में भी पढ़ाती है। बिहार की रेखा सिन्हा ने प्रशिक्षण के बाद 12वीं की पढ़ाई शुरू की और स्कूल में बच्चों को पढ़ा रही है। उत्तरप्रदेश जिला चंदोली की नीलम अहमद वर्तमान में मुरैना के स्कॉलर पब्लिक स्कूल में शिक्षिका के पद पर काम कर रही है। निर्मल ग्राम योजना के अंर्तगत प्रशिक्षण ली महिलाओं ने अपने गाँव में शौचालय बनाए हैं और लोगों को इसके फायदों के बारे में बताया है।

संस्थान में सेवा

आलीराजपुर के ओझड़ गाँव की श्रीमती ढेडी बागदरे ने प्रशिक्षण के बाद संस्थान में प्रशिक्षिका के पद पर काम किया और यहीं रहते हुए दसवीं और हिन्दी टायपिंग की परीक्षा पास की। कम्प्यूटर सीखा और अब ऑफिस का सारा काम करती हैं। आज वह संस्थान में कार्यक्रम अधिकारी के पद पर काम कर रहीं हैं। इसका पूरा श्रेय वह संस्थान को देती हैं। देवास की शर्मिला गौड़ संस्थान में ही कटाई सिलाई की प्रशिक्षिका हैं। खरगोन की मंटू सोलंकी गाँव–गाँव जाकर लड़कियों के साथ संस्थान के प्रशिक्षण का मूल्यांकन करती है। उनको यहाँ लाने के लिए तैयार करती है और प्रशिक्षण के फायदे बताती है। हाल ही में उन्होंने गाँवों में जाकर 180 पूर्व प्रशिक्षणार्थियों से बातचीत कर पता लगाया कि वे अपने गाँव के विकास के लिए क्या कर रहीं हैं। जिला बड़वानी की तारू जमरे ने अपनी पढ़ाई जारी रखते हुए संस्थान में टाईपिंग और कम्प्यूटर सीखा है और ऑफिस का काम कम्प्यूटर पर करती है। अभी वह संस्थान में साक्षरता पढ़ाने और सिलाई सिखाने का काम करती हैं। जिला आलीराजपुर की डांगरी डावर ने सौर ऊर्जा का उपयोग करना सीखा है और हर रोज सोलर कुकर पर 100 लोगों के लिए खाना बनाती है। कई महिलाओं ने संस्थान से बाटिक और ब्लॉक प्रिटिंग का भी प्रशिक्षण लिया। उनमें से भोपाल की श्रीमती चंदा पिपरिया और महाराष्ट्र की कुमारी अमृता पाठक संस्थान से जुड़कर अन्य प्रशिक्षणार्थियों को भी यह कला सीखा रही हैं। अमृता संस्थान में 'मेरा अपना और मेरे समुदाय का विकास' विषय पढ़ाती है और काम करते हुए 10वीं की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। कुमारी लता यादव ने मई 2006 में छत्तीसगढ़ बेवरती में विस्तार केन्द्र की शुरूआत की और प्रभारी के पद पर काम किया। वर्तमान में त्रिपुरा की श्रीमती मन्ना शर्मा विस्तार केन्द्र की प्रभारी के पद पर काम कर रहीं हैं। वह भी संस्थान से प्रशिक्षित है। संस्थान के ऐसे और कई उदाहरण हैं जो प्रशिक्षण के बाद अपने जीवन में आगे बढ़ी हैं और आत्मनिर्भर बन अपना, अपने परिवार और संस्थान का गौरव बढ़ाया है।

सम्मान व पुरस्कार

संस्थान

- 1990 में यू.के. के लेस्टर विश्वविद्यालय द्वारा संस्थान में साक्षरता पढ़ाने के तरीके को अपनाया गया।
- 5 जून 1992 को संयुक्त राष्ट्र संघ पर्यावरण कार्यक्रम (यू.एन.ई.पी.) द्वारा रियो डी जिनेरियो, ब्राजील में हुए भूसम्मेलन में झाबुआ जिले के 302 गाँवों में नारू उन्मूलन की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए संस्थान को ग्लोबल 500 रोल ऑफ ऑनर (विश्व 500 क्रम का सम्मान) से सम्मानित किया गया।
- 1994,यूनेस्को के इनोव डेटावेस पुस्तक में संस्थान को विकासशील देशों में 81 सफल शिक्षा परियोजनाओं में से एक सफल प्रोजेक्ट के रूप में मान्यता दी गई।
- 2000, यूनिसेफ, न्यूयार्क ने अपनी पत्रिका 'एक्शन फॉर गर्ल्स' में लड़कियों के सशक्तिकरण में माता–पिता की सहभागिता को स्वैच्छिक संगठन की अच्छी रणनीति माना।
- 2006,निपसीड द्वारा संस्थान को महिलाओं के सशक्तिकरण और बच्चों के विकास के लिए वैकल्पिक उदाहरण के रूप में चुना गया।
- 2008, सद्भावना प्रतिष्ठान द्वारा सेवा के क्षेत्र में योगदान देने के लिए संस्थान को सेवारत्न सम्मान से सम्मानित किया गया।
- 2009, पर्यावरण संरक्षण अनुसंधान एवं विकास केन्द्र इंदौर द्वारा पर्यावरणशास्त्री स्व. सुधीर मिश्रा की याद में पर्यावरण मित्र पुरस्कार 2008 बरली संस्थान को पर्यावरण के क्षेत्र में सबसे अच्छा काम करने के लिए दिया गया। यह पुरस्कार गाँधीजी की पौत्री सुश्री तारा भट्टाचार्य द्वारा दिया गया।

प्रशिक्षणार्थी

- 1990 में, संस्थान के दो प्रशिक्षणार्थियों सायटी और ढ़ेडी डावर को दिल्ली में यूनेस्को द्वारा नवसाक्षरों के लिए आयोजित गीत प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार दिया गया।
- बड़वानी की सारिका मुकेश प्रशिक्षण लेकर 'आशा कार्यकर्ता' बनी। वर्ष 2007 में उसे बड़वानी जिले से राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम का प्रशंसा पत्र दिया गया।

स्टाफ

- रोटरी क्लब ऑफ इंदौर सिटी द्वारा संस्थान की सिलाई की प्रशिक्षिका नूरनाज (नूरी) को मानव सेवा में अच्छा काम करने के लिए 2008 में सम्मानित किया गया।
- श्रीमती ढ़ेडी डावर को इंदौर महानगर महिला जनहित संगठन द्वारा संस्थान से स्वयं सीखकर दूसरों को सिखाने के कार्य के लिए वर्ष 2010 में सम्मानित किया गया।

संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक

संस्थान की निदेशिका और प्रबंधक को कई बार उनके कार्यों और उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया है। इन सालों में सामाजिक कार्य और पर्यावरण के क्षेत्रों में संस्थान की उत्कृष्ट प्रगति के कारण निदेशिका और प्रबंधक को कई सम्मेलनों, संगोष्ठियों और कार्यशलाओं में बरली संस्थान के कईप्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इससे संस्थान को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के संस्थाओं से अच्छे संबंध बनाए रखने में सहायता मिली। नीचे कुछ महत्वपूर्ण सम्मान और पुरस्कार हैं।

➢संस्थान की निदेशिका को 2001 में महिला सशक्तिकरण के कार्य के लिए धर्म भारती राष्ट्रीय पुरस्कार दिया गया।

➢संस्थान की निदेशिका को 2005 में मध्यप्रदेश राष्ट्र भाषा प्रचार समिति द्वारा महिला समाजसेवी सम्मान दिया गया।

➢मध्यप्रदेश सरकार ने डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन को राजमाता विजयाराजे सिंधिया समाजसेवा पुरस्कार 2007 के लिए सम्मानित किया गया। उन्हें यह पुरस्कार 1985 से अब तक आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण और विकास के लिए किए गए कामों के लिए दिया गया।

➢बरली संस्थान के प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन को 2008 में ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने एक सम्मान समारोह में लंदन के विडसर कासल में ''आर्डर ऑफ ब्रिटिश एम्पायर'' से सम्मानित किया। यह सम्मान उन्हें समाज सेवा व भारत के ग्रामीण समुदायों में वैकल्पिक ऊर्जा को बढ़ावा देने हेतु दिया गया।

संस्थान की निदेशिका कई महत्वपूर्ण सरकार की समितियों, स्वयंसेवी संस्थाओं और व्यवसायिक संस्थाओं से जुड़ी हैं। पिछले 25 वर्षों में संस्थान ने विभिन्न क्षेत्रों काफी विकास किया है और आने वाले वर्षों में भी करती रहेगी।

संस्थान के समाचार

रजत जयंती समारोह का शुभारम्भ

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 1 जून 2010 को रजत जयंती कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन संस्थान से प्रशिक्षित 25 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा दीप जला कर किया गया।

संस्थान की निदेशिका डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन ने

पुराने फोटो दिखा कर रोचक तरीके से 25 वर्षों में संस्थान द्वारा कार्यों एवं प्रगति की जानकारी दी और बताया "संस्थान बहाई शिक्षाओं से प्रेरित है जिसके मुख्य सिद्धांत हैं, मानवमात्र की एकता, विश्व शांति, स्त्री पुरूष समानता, विश्वव्यापी शिक्षा, विज्ञान और धर्म साथ–साथ चलें आदि। समाज का सतत विकास तभी होगा जब महिलाएँ विकास के कार्यक्रमों में बराबरी से भाग लेंगी। संस्थान के विकास का श्रेय उन्होंने संस्थान की प्रशिक्षणार्थी महिलाओं को दिया और ज्यादातर प्रशिक्षणार्थी संस्थान में प्रशिक्षिकाएँ बन कर संस्थान का कार्य बखूवी निभा रहीं हैं।" विशेष अतिथि प्रो. श्रीमती ताहिरा वजदी ने कहा, "जनक और जिम्मी ने 25 सालों में अपना सर्वस्व संस्थान को दिया है।" श्रीमती वंदना जमींदार ने कहा, "आज संस्थान को इस स्थिति में देखकर बहुत खुशी हो रही है। श्रीमती और श्री मगिलिगन के परिश्रम आज साफ दिखाई दे रहें हैं।"

मुख्य अतिथि नर्मदा कंट्रोल अथौरिटी के निदेशक डॉ. अफरोज अहमद ने कहा "संस्थान में जो शिक्षा महिलाओं को दी जा रही है, वैसी पूरे भारत में कहीं नहीं दी जा रही है। संस्थान प्रशिक्षण के माध्यम से जो विकास की बातें गाँवों तक पहुँचाते है वह प्रशंसनीय है।"

अध्यक्षता करते हुए इंदौर संभाग के आयुक्त श्री बसंत प्रताप सिंह ने कहा "बरली संस्थान में जो संस्कार लड़कियों को दिए जा रहें हैं, वे इन्हें आगे अच्छा परिवार बनाने में काम आएंगे। यही लड़कियाँ भविष्य में निश्चित रूप से बेहतर परिवार और समाज बनाएंगी।"

विशेष अतिथि, निदेशक मंडल की सदस्या डॉ. (श्रीमती) शिरीन महालाती ने कहा, "कर्मठ दम्पति जनक और जिम्मी ने अपने जीवन के 25 साल संस्थान में लगाए जो हमेशा अमर रहेगा। उन्होंने जो मोमबती जलाई है वह कभी नहीं बुझेगी और एक से हजारों मोमबत्तियाँ हमेशा जलती रहेंगी और अपना प्रकाश फैलाएंगी।"

विश्व पर्यावरण दिवस पर कार्यशाला

रजत जयंती समारोह के अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2010 को मनाया गया। इस अवसर पर विशेष तौर पर 1–5 जून पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की गई जिसका मुख्य विषय 'अनेक प्रजातियाँ, एक ग्रह, एक भविष्य' था। कार्यशाला में शहर के कई डॉक्टरों, पर्यावरणविद्, शिक्षाविद्, जैविक खेती विशेषज्ञों और समाज सेवियों ने प्रशिक्षणार्थियों को कई महत्वपूर्ण बातें बताईं। स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. रेणु तनेजा ने बताया कि "फल सब्जियाँ, खाने से पहले अच्छी तरह धो कर खाना चाहिए। पानी उबालकर पीने से कई तरह की बीमारियों से बचा जा सकता है।" बुनियाद प्रोजेक्ट की प्रोजेक्ट अधिकारी सुश्री प्रीती निगम ने कहा "लड़कियों की देखभाल किशोरावस्था में सही विकास होगा तो महिला सारी उम्र स्वस्थ रहेगी।" पूर्व आई.ए.एस. श्री के. एस. परमार, शिक्षाविद् डॉ. बी. के. निलोसे और स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. सी. एस. गंधे ने बताया "शराब, तम्बाकू व नशीली पदार्थों के सेवन से कैंसर, टी.बी. और फेफड़ों की खतरनाक बीमारियाँ फैलती हैं।" पहल जन सहयोग विकास संस्थान के श्री प्रवीण गोखले व श्रीमती अनूपा गोखले ने बताया "ठहाके लगाकर व

खुल के हँसना अच्छा रहता है। इससे हमारे मुँह के अंदर हवा जाती है और फेफड़ों की सफाई होती है। उन्होंने कहा "महिलाओं को भी खुल कर हँसने का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरूषों को। हम जिस समाज में रहते है उसमें महिलाओं के लिए अलग नियम बनाए गए हैं और पुरूषों के लिए अलग जो कि गलत है। महिला पुरूष को समान अवसर और अधिकार मिलने चाहिए।" शिशु रोगविशेषज्ञ डॉ. सविता इनामदार ने कहा "माँ के दूध में वे सभी तत्व होते है जो बच्चे के विकास के लिए जरूरी होते हैं।" परिवार नियोजन विशेषज्ञ, डॉ. ललित मोहन पंत ने कहा " पर्यावरण असंतुलन बढ़ने का सबसे बड़ा कारण जनसंख्या का बढ़ना है। परिवार नियोजन के तरीके अपना कर इस समस्या से निपटा जा सकता है।" सी.एच.एल. अपोलो हॉस्पिटल की स्टाफ नर्स श्रीमती जासमिन बिजू ने थर्मामीटर पर शरीर का तापमान देखना भी सिखाया। पर्यावरणविद् व प्रकृति छाया चित्रकार श्री भालू मोंढे और पक्षी प्रेमी श्री कुस्तुबे ऋषी ने अनेक प्रकार के प्रजातियों की पक्षियों के चित्र दिखाकर समझाया कि पक्षी प्रकृति की रक्षा करते है।"जैविक खेती विशेषज्ञ डॉ. अरूण डीके ने कहा "रासायनिक खाद और कीटनाशक से फसलों को नुकसान पहुँचता है। मिट्टी को उपजाऊ बनाए रखने के लिए प्राकृतिक खाद का उपयोग करना चाहिए।" डॉ. मनोहर भंडारी ने कहा "रोज नहाने से चमड़ी की बीमारियाँ नहीं होती है। इसके साथ साफ और धुले कपड़े पहनने चाहिए। गुस्सा करने से शरीर में ऐसे रसायन पैदा होते हैं जिससे किडनी और दिल में खराबी और हमेशा तनाव में रहने की बीमारी हो जाती है। हमारे पास जितना है उसमें संतोष करना चाहिए इससे हम मन व बुध्दि से स्वस्थ रहते हैं।" पर्यावरणविद डॉ. राकेश त्रिवेदी ने कहा "प्रकृति के संसाधनों का उपयोग उसी तरह करना चाहिए जिस तरह से हम अपने रूपए पैसे खर्च करते हैं। पर्यावरण को शुद्ध रखना है तो ऐसे पेड़ लगाने चाहिए जो हमारे आने वाली पीढ़ी के काम आए।" देवी अहिल्या विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति डॉ. भरत छपरवाल ने कहा "एक परिवार को यदि सुखी परिवार के रूप में देखना है तो महिलाओं को शिक्षित करना बहुत जरूरी है ताकि वह अपना और अपने परिवार के स्वास्थ्य का ध्यान बराबर रख पाए। जिस देश में महिलाएँ स्वस्थ रहने के तरीके जानती है वह देश कभी भी पीछे नहीं रह सकता है।" सोसाइटी फॉर नेचर एजुकेशन एंड हेबीटेट संस्था के अध्यक्ष श्री दिनेश कोठारी ने कहा "आज के समय में लोग प्राकृतिक चीजों से ज्यादा बाहर की चीजों का अधिक उपयोग करते हैं। अपने ही खेतों में उगने वाले ज्वार, बाजरा आदि का इस्तेमाल कम करते जा रहे है। पहले के लोगों को स्वस्थ्य रहने के लिए दवाई की जरूरत नहीं थी क्योंकि उनका खान पान ऐसा था कि उन्हे कोई बीमारी ही नहीं होती थी।" जंगल लकड़ी, जड़ी–बूटियाँ और दवाईयों के साथ पानी देते हैं। इसलिए जंगलों की सुरक्षा करनी होगी तभी पानी मिलेगा।"

दीक्षांत समारोह

संस्थान के 98 वें सत्र के प्रशिक्षणार्थियों का दीक्षांत समारोह 5 जून को ही मनाया गया। मुख्य अतिथि उद्बोधन में जम्मू कश्मीर के उप राज्यपाल के भूतपूर्व सलाहकार डॉ. बी. जे. हीरजी, (सेवानिवृत आई. ए. एस.) ने कहा "बड़ी प्रसन्नता है कि 25 वर्षों में जनक दीदी और जिम्मी ने संस्थान को जीवित रखा। दोनों ने एक जादू रचा है। समाज में एक ऐसा चिराग जलाया है जो दूर–दूर तक रौशनी दे रहा है। इन्हें क्या प्रमाण पत्र दें, ये तो स्वयं ही प्रमाण पत्र बाँट रहें हैं। महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा और स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण बताया जिससे महिलाओं के विकास में परिवर्तन लाया जा सकता है।" कार्यक्रम में विशेष अतिथि सिरडी संस्था, भोपाल के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र शर्मा और निदेशक मंडल सदस्या डॉ. गीता हांडा थे। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थी में से आलीराजपुर की गौरी चौहान ने कहा, "छह महीने के प्रशिक्षण में मै बहुत कुछ पढ़ना लिखना सीख गई हूँ।" धार की धनबाई डावर ने स्वयं तैयार किए हुए कपड़े दिखाए और सिलाई सीखने का अनुभव बताया। देवास की मालती मंसोरे ने कहा "बच्चों को सही उम्र में स्कूल भेजना चाहिए और अच्छी बातें सिखाना चाहिए ताकि बड़े होकर वे अच्छे इंसान बनें।"

कार्ययोजना प्रस्तुती

दीक्षांत समारोह में कई प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि प्रशिक्षण में सीखी बातों का उपयोग वे अपने परिवार और समुदाय में किस तरह करेंगे। सांगवी की राधा चौहान ने कहा "मै गाँव में सभी को बताउंगी कि हमें पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। हमारे गाँव में लोगों ने लकड़ी के लिए बहुत सारे पेड़ों को काट दिया जिसके कारण जंगल बहुत दूर हो गए हैं। सभी को बताएंगे कि जब भी पेड़ काटना है तो सरपंच या सरकार से अनुमति लेना जरूरी है।" गवल की संगीता जमरे ने कहा "मैने सीखा कि बारिश के पानी को रोक कर हम उसका दोबारा उपयोग कर सकते हैं। बर्तन, कपड़े तथा सब्जियों को धोने के बाद पानी को फेंकना नहीं चाहिए। उनको पेड़–पौधों में डाल देना चाहिए।" कोठा की सुनिता चौहान ने कहा "मै गाँव में लड़कियों को सिलाई सिखाऊँगी। मैने समझा कि बीमार होने पर बढ़वे के पास नहीं अस्पताल जाकर इलाज करवाना चाहिए।" ताराबावड़ी की ललिता वास्कले ने बताया "मेरे गाँव में किसी को कुष्ठ रोग हो जाता है तो उसे जिंदा गाड़ देते है। अब मैं वापस

जाकर बताउंगी कि ऐसा करना गलत है।" नीमा और साथी बहनों ने एक लघु नाटिका प्रस्तुत की जिसके माध्यम से संदेश दिया गया कि अगर किसी को बुखार आता है तो पहले थर्मामीटर से शरीर का तापमान लेना चाहिए और हाथ–पैर पर ठंडे पानी की पट्टियाँ रखनी चाहिए। उसके बाद अस्पताल ले जाना चाहिए। बलकी, मुन्नी व साथी बहनों ने भिलाली में

सामूहिक गीत गाए। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को मुख्य अतिथि द्वारा प्रमाण पत्र भेंट किए गए।

राष्ट्रीय कार्यशाला में भागीदारी

मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद द्वारा भोपाल में 7 से 9 जून तक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। कार्यशाला में बरली संस्थान की निदेशिका ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य विषय था मध्यप्रदेश के अलग–अलग क्षेत्रों में काम कर रही स्वयंसेवी संस्थाओं की क्षमता बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि वे सरकार के साथ सहयोग कर विकास योजनाओं में सहयोग दे सकें।

जनशिक्षण संस्थानों की कार्यशाला

मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के जनशिक्षा संस्थानों के अध्यक्ष व निदेशकों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यक्रम में जनजातीय कार्यमंत्री श्री कांतिलाल भूरिया ने

डॉ. (श्रीमती) जनक मगिलिगन, श्री कांतिलाल भूरिया, श्रीमती स्नेहलता कुमार और श्री जिम्मी मगिलिगन

कहा, आदिवासियों के विकास के लिए सरकार कई योजनाएँ चला रहीं हैं। आदिवासी अपनी बनाई गई कलाकृतियों को बेचकर अच्छा पैसा कमा सकते हैं। राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति वित एवं विकास निगम और ट्रायफेड, जनशिक्षण संस्थान के साथ मिलकर आदिवासी समाज को आगे लाना चाहता है। कार्यशाला में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्यमंत्री डी. पुरन्देश्वरी, एन.एस.टी.एफ.डी.सी. के अध्यक्ष गुरू स्वरूप सूद , ट्राईफेड की प्रबंध निदेशक श्रीमती स्नेह लता कुमार और बरली संस्थान की निदेशिका डॉ. जनक मगिलिगन व प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने भाग लिया।

गाँवों के सरकारी स्कूलों को सहयोग

लोकसभा सांसद श्रीमती सुमित्रा महाजन की अध्यक्षता में 23 जून 2010 को एक बैठक में जिला पंचायत में 'स्कूल चलें हम' अभियान व शिक्षा अधिकार कानून के संबंध में चर्चा हुई। उन्होंने कहा इस अभियान में स्वयंसेवी संगठनों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। स्वयंसेवी संगठनों के साथ इस बात पर चर्चा की गई की कि ग्रामीण क्षेत्रों में कैसे ज्यादा से ज्यादा बच्चे स्कूल जाएं। सभी संस्थाओं ने मिलकर जिले के 100 स्कूलों को आदर्श स्कूल बनाने में सहयोग देने का वायदा किया। बैठक में संस्थान की निदेशिका ने भी भाग लिया।

सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण

बरली संस्थान में रजत जयंती कार्यक्रम के अन्तर्गत जून के महीने में दो बार 1 से 5 और 28 से 30 जून सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला अमेरिका स्थित संस्था केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन के सौजन्य से की गई थी। इसमें कुल 57 पूर्व प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। संस्थान की निदेशिका ने कहा "रजत जयंती वर्ष में हर महीने संस्थान से प्रशिक्षित प्रशिक्षणार्थियों को सामुदायिक स्वास्थ्य प्रशिक्षिका का प्रशिक्षण दिया जाएगा। गाँव में अभी भी स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता की बहुत कमी है इसी कारण कुपोषण, मातृ और शिशु मृत्यु दर बहुत ज्यादा है और लोगों को स्वास्थ्य की सामान्य जानकारी भी नहीं है जैसे चोट लगना, जलना, मोच आना, लू लगना, बुखार आने पर क्या करना चाहिए। इसी उद्‌देश्य से उन्हें यहाँ समुदाय में सेवा देने के लिए तैयार किया जाएगा ताकि गाँवों में जागरूकता आए।"

लखनऊ विश्वविद्यालय की छात्रा का प्रशिक्षण

लखनऊ विश्वविद्यालय के नवीकरणीय ऊर्जा विभाग की एम. एस. सी. की छात्रा कुमारी शानु सिंह ने संस्थान में एक महीने के प्रशिक्षण में सौर ऊर्जा के उपयोग सोलर कुकर बनाना

सीखा। उन्होंने कहा कि "यहाँ पर होने वाले सभी कामों को देखकर मै बहुत ही प्रभावित हुई, जैसे यहाँ पर पूरा खाना सोलर कुकर पर ही बनाया जाता है। सभी बेकार की चीजों को दोबारा उपयोग करते हैं।"

स्वयंसेवा के अनुभव

❖कनाडा की कारला जॉनसन ने कहा "बरली ने मुझे बहुत सारी अच्छी यादें दी हैं। मैने अपनी पढ़ाई के लिए अंतर्राष्ट्रीय विकास का विषय चुना है। यहाँ पर रह कर जो ज्ञान मुझे मिला है उससे प्रेरित होकर मैने महिला विकास में विशेष योग्यता प्राप्त करने का निर्णय लिया है। बरली मेरे भविष्य को सही दिशा दे रहा है। जनक दीदी, जीजाजी और बरली के सभी स्टाफ द्वारा किया जाने वाला समर्पित कार्य मुझे भविष्य में लगन और मेहनत से काम करने और अपने स्वयं का स्वयं सेवी संस्थान स्थापित करने का प्रेरणा देता रहेगा।"

❖आयरलैंड की लीसा ने प्रशिक्षणार्थियों को अंग्रेजी सिखाई। उन्होंने कहा, "संस्थान में किया जाने वाला कार्य बहुत प्रेरणादायी हैं। मैने यहाँ बहुत अच्छा समय बिताया है।"

संस्थान में आए मेहमान

◆राष्ट्रीय जनजाति वित्त एवं विकास निगम की अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री गुरूसरूप सूद ने कहा "संस्थान के द्वारा किया जाने वाला कार्य प्रकृति और मनुष्य के बहुत करीब है। मेरी समढ से भारत के तीन चौथाई भाग को काम के इस उत्साह और तकनीक की आवश्यकता है।"

◆भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ मर्यादित (ट्राईफेड) की प्रबंध निदेशक श्रीमती स्नेह लता कुमार ने कहा, "यहाँ पर हर बार आना बहुत प्रेरणादायी होता है। मेरा संस्थान से संबंध 1988 में शुरू हुआ था, जब मैं देवास की कलेक्टर थी। मैने उस समय यहाँ पर व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया और आवासीय भवन का रिबन काटा था। जनक दीदी और जिमी जीजाजी दोनो बहुत ही विनम्र है और अपना पूरा जीवन इस क्षेत्र के गरीब युवा आदिवासी महिलाओं के सम्पूर्ण विकास और सशक्तिकरण में समर्पित कर दिया। एक और इनकी विशेष उपलब्धि यह है कि इन्होंने गाँव के लोगों को सोलर ऊर्जा का प्रयोग करना सिखाया जो कि उनके रोज के जीवन में काफी उपयोगी साबित हुआ है। इस दौरे के दौरान सोलर बेकरी और सोलर ड्रायर, जिसमे मोबाइल चार्ज करने की भी सुविधा है, जैसी आश्चर्यजनक चीजें सामने आई। बहुत ही बढ़िया काम कर रहें हैं। मै उनको हमेशा खुशी से सहयोग देने के लिए तैयार हूँ। मैं आशा करती हूँ कि यहाँ पर बनाए जाने वाले सुंदर कपड़ों को 'ट्राईबस इंडिया' के सहयोग से बिक्री करवाने में पूरा सहयोग करूँगी।"

◆अमेरिका के केयरिंग हैंड फॉर चिल्ड्रेन संस्था की सदस्य श्रीमती विनीता गोयल अपनी बेटी शगुन गोयल के साथ संस्थान आई। उन्होंने कहा, "बरली संस्थान में आना बहुत ही प्रेरणादायी अनुभव था। डॉ. जनक और श्री जिम्मी का सर्मपण सचमुच बहुत प्रेरणादायी है।"

◆भारत सरकार, नई दिल्ली के जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ मर्यादित के उप महाप्रबंधक श्री आर. के. सिंह ने कहा, "संस्थान द्वारा विभिन्न प्रकार के सोलर उपकरण का विकास और उपयोग करने के तरीके को देखकर मै बहुत प्रभावित हुआ।" सोलर ड्रायर में सुखाई जाने वाली चीजों के रंग प्राकृतिक हैं। यहाँ पर बनाए गए कपड़े काफी आकर्षक हैं। संस्थान द्वारा आदिवासियों को दिया जाने वाला व्यवसायिक प्रशिक्षण उनके

सामाजिक और आर्थिक विकास में सहायक है।"

छत्तीसगढ़ के समाचार

बरली विस्तार केन्द्र में विश्व पर्यावरण दिवस

रजत जयंती कार्यक्रम के अंर्तगत विस्तार केन्द बारदेवरी में 5 जून 2010 को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला शिक्षा मण्डल के उप प्राचार्य श्री पी. आर. सोनवानी ने कहा "आज से 8 साल पहले छत्तीसगढ़ की सारी नदियों के आसपास हरा–भरा रहता था जिससे हरियाली रहती थी। लेकिन अब सबसे बड़ी महानदी से लेकर सभी नदियाँ सूख गई है। पानी नहीं होने के कारण अनेक जंगली जीव–जन्तु, जानवर मर रहे है। दुनिया में पानी के लिए लड़ाई–झगड़े हो रहे है। महिलाओं को अपने परिवार व गाँव में बरसात के पानी को रोकना चाहिए।" श्री मोतीराम यादव ने कहा "अगर हमारे अंदर इंसानियत होती तो हम हमारे बच्चों और पेड़–पौधे में भेदभाव नहीं करते। आजकल बच्चे भी बड़े होकर माता–पिता का साथ छोड़ देते है पर एक पौधे को बड़ा करते है तो उसके पत्ते से जड़ तक हर एक हिस्सा हमारे ही काम आते है।"

रजत जयंती कार्यक्रम में इंदौर आने की सूचना इन फोन नं. पर दे सकते हैं।
0731–2554066, 9424009909, 9993351203, 9617256818

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी
सुश्री विजयश्री व श्री जिम्मी मगिलिगन

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"
बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान
180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.)

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित
मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**